Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-6, Issue-2, Year-2016 (July-December)
PP: 7-9 *ISSN: 2249-040X*

माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्य-आधारित दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण

प्रदीप कुमार यादव

रिसर्च स्कॉलर, डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन एंड फिजिकल एजुकेशन, श्याम यूनिवर्सिटी, दौसा, राजस्थान

सार

शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा, जो किसी समाज और देश के चहुँमुखी विकास का आधार है, को विकसित करना होगा। इससे मूल्य आधारित शिक्षा के दिव्यत्व से प्रेरित समाज सेवी, राष्ट्रभक्त, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण विकसित लोग पैदा होंगे। मूल्याधारित शिक्षा के अभाव में, समाज हिंसक हो जाता है और समाज की आधारभूत संस्थाओं जैसे परिवार विवाह टूट जाते हैं, भ्रष्टाचार बढ़ा जाता है और चरित्र गिर जाता है। यही कारण है कि देश की भौतिक प्रगति होने के बावजूद भी देश अराजकता में है। शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों को उच्चतम मूल्यों को विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए, लेकिन यह तभी संभव है जब शिक्षक अपने स्वयं के मूल्यों से सहमत हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा मूल्यों और समाज का चित्र है। समाज में प्रचलित मूल्य शिक्षा का आधार हैं। यदि किसी देश को विश्व भर में लोकप्रिय बनाना है, तो उसके उद्देश्य, आदर्श और मूल्यों को पूरा करना होगा। इसलिए शिक्षा एक प्रभावी माध्यम है जो एक देश के उद्देश्यों, आदर्शों और मूल्यों को एक आइने की तरह दिखाता है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक और छात्र दो महत्वपूर्ण कारक हैं जो समाज को बदल सकते हैं। ये लोग भारत की शिक्षा प्रणाली में नए विचार, दृष्टिकोण और मूल्यों को लाकर देश का भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अपने अलग-अलग मूल्य होते हैं, और वे उसी के अनुसार अपने जीवन के हर हिस्से में कार्य करते हैं।

मूल्य का अर्थ

मूल्य एक मानक है। मनुष्य निर्णय लेता है कि किसी वस्तु, क्रिया या विचार को अपनाए या त्याग दे। मूल्य तब होता है जब ऐसा विचार या भाव व्यक्ति के मन में निर्णायक रूप से आता है।

मूल्य की विशेषताएँ

मूल्यों की परिभाषा के आधार पर मूल्यों की विशेषताएँ निम्न हैं –

1 मूल्य अहम (मैं) से वयम् (हम) अर्थात् मैं से परिवार, समाज, देश और दुनिया तक पहुँचने का रास्ता बताते हैं।

2 हम मूल्यों को सामान्य व्यवहार में पसंद करते हैं।

3 व्यक्ति और समाज दोनों को मूल्यों को पाने की इच्छा है।

4 मूल्य मानदंड हैं जो लक्ष्य निर्धारित करते हैं।

5 मूल्य वह व्यवहार है जिसके द्वारा एक व्यक्ति जिम्मेदार नागरिक बन सकता है और अच्छे और बुरे कामों को पहचान सकता है।

6 मूल्य प्रत्येक व्यक्ति को उनके काम में मार्गदर्शन देते हैं और हर जगह समान हैं।

© National Press Associates www.npajournals.org

व्यक्तिगत मूल्य

व्यक्तिगत मूल्यों में स्वावलंबन, स्वच्छता, श्रमप्रतिष्ठा, निर्भयता, विज्ञाननिष्ठा, प्राणीदया, अनुशासन प्रियता, धार्मिक विश्वास, नैतिक अभिवृत्ति, जीवन दर्शन, राजनैतिक आदर्श सम्मिलित होते हैं। व्यक्तिगत मूल्यों के अन्तर्गत 10 मूल्य सम्मिलित किये गये हैं।

(क) धार्मिक मूल्य,

(ख) सामाजिक मूल्य,

(ग) प्रजातांत्रिक मूल्य,

(घ) सौंद्रायतमक मूल्य,

(च) आर्थिक मूल्य,

(छ) ज्ञानात्मक मूल्य,

(ज) आनंदपरक मूल्य

(झ) शक्ति मूल्य,

(ट) पारिवारिक स्तर मूल्य,

(ठ) स्वास्थ्य मूल्य।

मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक का योगदान

शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा को विकसित करना होगा, जो किसी समाज और देश के चहुँमुखी विकास का आधार है। इससे मूल्य आधारित शिक्षा के दिव्यत्व से प्रेरित समाज सेवी, राष्ट्रभक्त, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण विकसित लोग पैदा होंगे। सृजनशीलता और काम के प्रति प्रतिबद्धता इन अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता होती है। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों के लिए सदा श्रद्धा व सम्मान के पात्र हैं। ऐसे शिक्षकों पर विद्यार्थियों का भरोसा बढ़ता है। शिक्षक विद्यार्थियों को अवांछनीय, असामाजिक, उद्देश्यहीन दिशा में चलने से रोक सकते हैं। शिक्षक सिर्फ अपने विद्यार्थियों को सभ्य और जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए अनुकूल वातावरण बनाते हैं। साथ ही विद्यार्थियों को नकारात्मक परिस्थितियों के बुरे प्रभावों से भी सचेत करते हैं। शिक्षक के प्रत्येक कार्य में, चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक या आध्यात्मिक हो, राष्ट्रीय व नैतिक मूल्यों का संस्कार छात्रों में प्रतिबिंबित होना चाहिए. इससे अच्छे चरित्र और अच्छे संस्कारों का विकास होगा और अगली पीढ़ी में सत्यनिष्ठा, परोपकार, देशसेवा, कर्तव्यपरायणता और अन्य शाश्वत मानवीय मूल्यों का विकास होगा। शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा उदाहरण होना चाहिए जिसके संपर्क में आने से लोहा भी कुन्दन बन जाता है

संदर्भ

1. नायक, गोपाल प्रसाद (2009), मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की भूमिका, परिपेक्ष्य-16, अंक-3, दिसम्बर 2009
2. पटेल भारती एवं सोमेजी भावना (2008), शासकीय एवं आशासकीय विद्यालयों की छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च लिंक 50(ए), अंक-7(3) मई पृष्ठ 68 - 69
3. पासी, बी.के.एवं सिंह,पी (2009), वैल्यू एजूकेशन, एन.पी.सी., आगरा।
4. रूहेला, एस.पी. (2012), डायमेंशन ऑफ वैल्यू एजूकेशन, आगरा, एच.पी.भार्गव बुक हाऊस

© National Press Associates www.npajournals.org

5. शेरी, जी.पी.वर्मा एवं आर.पी. (2005) परसनल वैल्यू क्वेशचनायर (पी.बी.क्यू), एन.पी.सी., आगरा
6. सुमित्रा सिंह, मैथिलीरमण (2009), वर्तमान शिक्षा के मूल्य संकट क्यों कारण एवं सुझाव,
7. परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 1, दिसंबर
8. साहनी, मधु (2009), माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 2, अगस्त
9. मृदुला शर्मा (1995) विचाराधारा मूल्य और शिक्षा का पारस्परिक संबंध, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 2 अंक 1
10. सुमित्रा सिंह, (2005) सामाजिक मूल्यों संस्थाओं और परम्पराओं पर भूमंडलीकरण का प्रभाव, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 12 अंक 3

© National Press Associates www.npajournals.org